

## लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारि सुरार्चित लिङ्गं  
निर्मलभासित शोभित लिङ्गम् ।  
जन्मज दुःख विनाशक लिङ्गं  
तत्-प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ 1 ॥

देवमुनि प्रवरार्चित लिङ्गं  
कामदहन करुणाकर लिङ्गम् ।  
रावण दर्प विनाशन लिङ्गं  
तत्-प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ 2 ॥

सर्व सुगन्ध सुलेपित लिङ्गं  
बुद्धि विवर्धन कारण लिङ्गम् ।  
सिद्ध सुरासुर वन्दित लिङ्गं  
तत्-प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ 3 ॥

कनक महामणि भूषित लिङ्गं  
फणिपति वेष्टित शोभित लिङ्गम् ।  
दक्ष सुयज्ञ निनाशन लिङ्गं  
तत्-प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ 4 ॥

कुङ्कुम चन्दन लेपित लिङ्गं  
पङ्कज हार सुशोभित लिङ्गम् ।  
सञ्चित पाप विनाशन लिङ्गं  
तत्-प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ 5 ॥

देवगणार्चित सेवित लिङ्गं  
भावै-भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।  
दिनकर कोटि प्रभाकर लिङ्गं  
तत्-प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ 6 ॥

अष्टदलोपरिवेष्टित लिङ्गं  
सर्वसमुद्भव कारण लिङ्गम् ।  
अष्टदरिद्र विनाशन लिङ्गं  
तत्-प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ 7 ॥

सुरगुरु सुरवर पूजित लिङ्गं  
सुरवन पुष्प सदार्चित लिङ्गम् ।  
परात्परं परमात्मक लिङ्गं  
तत्-प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ 8 ॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेशिव सन्निधौ ।  
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

---

www.YouSigma.com